18

अभिव द्धि और विकास (0–5 वर्ष)

भ्रूणावस्था से लेकर पूर्ण विकसित वयस्क होने तक मानव के विकास ने लोगों को पीढ़ियों तक सम्मोहित किया है। यह ज्ञान न केवल स्वयं को समझने के लिये लाभदायक है वरन बच्चों के विकास का मार्गदर्शन करने में भी सक्षम है। आप में से कुछ छोटे बच्चों के माता पिता होंगे अथवा आने वाले समय में माता पिता बनेंगे। बच्चों के जन्म के बाद होने वाले विकास का ज्ञान आपको बच्चों के जन्म से लेकर बड़े होने तक के विकास को समझने में सहायता करेगा। आप उन क्षेत्रों का पता लगा पायेंगे जहाँ आपके बच्चों की अभिव`द्धि या विकास असमान्य या धीमी गति से हो रहा है।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के पश्चात आप निम्न में सक्षम हो सकेंगे–

- मानव जीवन चक्र की अवस्थाओं का सूचीकरण;
- अभिव`द्धि एवं विकास के नमूने की तथा उन्हें प्रभावित करने वाले कारकों की व्याख्या;
- 0–5 वर्ष के दौरान होने वाले विकास के मील के पत्थरों का सूचीकरण;
- सामाजिक व भावनात्मक विकास पर प्रकाश डालना;
- भाषा विकास की व्याख्या;
- संज्ञानात्मक विकास की पहचान;
- बच्चों की देखभाल तथा व्यवहारगत समस्याओं की व्याख्या।

18.1 जीवन चक्र की अवस्थाएं

मानव विकास को अच्छी तरह से तभी समझा जा सकता है जब हम उसकी विभिन्न अवस्थाओं पर ध्यान केंद्रित करें। मानव जीवन चक्र को निम्न अवस्थाओं में वर्गीकृत किया जा सकता है।

तालिका 18.1 जीवन चक्र की अवस्थाएं

क्र. संख्या	जीवन की अवस्थाएं	आयु
1.	गर्भावस्था	गर्भाधान से जन्म तक
2.	नवजात शिशु अवधि	जन्म से एक महीने तक
3.	शैशवावस्था	एक माह से 2 वर्ष तक
4.	प्रारंभिक बाल्यावस्था	2 से 6 वर्ष
5.	मध्य बाल्यावस्था	6 से 11 वर्ष
6.	किशोरावस्था	11/12 से 18/19 वर्ष
7.	प्रारंभिक प्रौढ़ावस्था	18/19 से 40 वर्ष
8.	मध्य प्रौढ़ावस्था	40 से 60 वर्ष
9.	व`द्धावस्था	60 वर्ष से ऊपर

यदि आप ऊपर दी गई तालिका पर द`ष्टिपात करें तो आपको समझ आ जायेगा कि ऊपर दी गयी पहली पाँच अवस्थाओं में से पहली अवस्था जन्म से पूर्व की है और बाकी चार को बाल्यावस्था के अंदर ही एकीकृत किया जा सकता है। बाल्यावस्था के बाद किशोरावस्था और उसके बाद प्रौढ़वस्था आती है जिसमें सातवीं व आठवीं अवस्थाएं समाहित हैं। अंतिम अवस्था व`द्धावस्था है। अतः जन्म के पश्चात मुख्यतः चार ही अवस्थाएं हैं जो निम्न हैं–

1. बाल्यावस्था
2. किशोरावस्था
3. प्रौढ़ावस्था
4. व`द्धावस्था

18.2 विकास के नमूने

जैविक, सामाजिक और संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं के बीच होने वाली अंर्तप्रक्रियाओं के परिणामस्वरूप होने वाले परिवर्तनों का नाम ही विकास है।

1. **जैविक प्रक्रियाओं** के अंर्तगत वे परिवर्तन आते हैं जो शारीरिक हैं। हमारी अनुवांशिकता, शारीरिक अंगों का विकास, संवेगात्मक कौशल, किशोरावस्था के हॉरमोन संबंधी परिवर्तन आदि सभी परिवर्तन विकास में जैविक प्रक्रियाओं की भूमिका को दर्शाते हैं।

2. **संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं** के अंर्तगत बालक का चिंतन, बौद्धिकता और भाषा आती हैं। प्रत्यक्षीकरण, ध्यान, संज्ञान, समस्याओं का निदान, स्मरण शक्ति, काल्पनिकता आदि सभी बालक की संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं पर प्रकाश डालते हैं।

3. **सामाजिक प्रक्रियाओं** में अन्य लोगों के साथ बालक का संबंध, भावनाएं और व्यक्तित्व आते हैं। बच्चे की पहली मुस्कान, माता व बालक के बीच आपसी लगाव का विकास, बच्चों में मिलना–बाँटना, अपनी बारी की प्रतीक्षा करना, दूसरों के साथ खेलना आदि विकास की सामाजिक प्रक्रियायें हैं।

आपको याद रखना चहिये कि ये सभी प्रक्रियायें बारीकी से एक दूसरे से गुंथी हुयी हैं जिसका अर्थ है ये सतत एक दूसरे को प्रभावित करती हैं। संज्ञानात्मक प्रक्रियायें सामाजिक-भावनात्मक प्रक्रियाओं को बढ़ावा देती हैं और जैविक प्रक्रियायें सज्ञांनात्मक प्रक्रियाओं को प्रभावित करती हैं। उदाहरण के लिये एक बीमार (जैविक प्रक्रिया) बच्चा चिड़चिड़ा होता है और लगातार रोता रहता है (सामाजिक-भावनात्मक)। वह नियमित रूप से स्कूल भी नहीं जा सकता और इस प्रकार पढ़ाई में पिछड़ जाता है (संज्ञानात्मक प्रक्रिया)। लगातार चिड़चिड़ेपन से अन्य लोगों के साथ उसके संबंध भी प्रभावित होने लगते हैं (सामाजिक प्रक्रिया)।

क्रियाकलाप 18.1 : संज्ञानात्मक, सामाजिक और जैविक प्रक्रियाओं के पाँच-पाँच उदाहरणों की सूची बनाइये। इनमें से किन्हीं दो परिस्थितियों के अंर्तसंबंध को दिखाने का प्रयास करिये।

क्र.स.	संज्ञानात्मक	सामाजिक	जैविक	संबंध
1.				
2.				
3.				
4.				
5.				

पाठगत प्रश्न 18.1

1. निम्न में विकास की अवस्थाओं और नमूनों का उनके विवरण के साथ मिलान कीजिए।

I (अवस्था व नमूने)	**II (विवरण)**
(i) नवजात	(a) 18/19 साल से 40 साल
(ii) किशोरावस्था	(b) 2 से 6 साल

टिप्पणी

(iii) प्रारंभिक प्रौढ़ावस्था	(c) कद में व`द्धि
(iv) प्रांरभिक बाल्यावस्था	(d) मित्र बनाना
(v) संज्ञानात्मक प्रक्रिया	(e) जन्म – 1 माह
(vi) सामाजिक प्रक्रिया	(f) रंग बिरंगे झुनझुने को ध्यानपूर्वक देखना
(vii) जैविक प्रक्रिया	(g) 11/12साल से 18/19 साल
	(h प्रसन्नता व्यक्त करना
	(i) वजन में व`द्धि
	(j) मित्रों के साथ झगड़ा

2. उपरोक्त प्रश्न में से विकास की अवस्थाओं को छाँट कर यहाँ लिखिए।

____

____

____

____

____

3. उपरोक्त प्रश्न में विकास के नमूनों को छाँटकर यहाँ लिखिए।

____

____

____

____

____

18.3 प्रारंभिक बाल्यावस्था में अभिव`द्धि व विकास

अभिव`द्धि और विकास एक दूसरे की पूरक प्रक्रियायें हैं। अभिव`द्धि शरीर में मात्रात्मक परिवर्तन है यानि लम्बाई और वजन में जबकि विकास गुणात्मक व मात्रात्मक दोनों ही प्रकार के परिर्वन हैं। उदाहरण के लिये भाषा अधिग्रहण। विकास का अर्थ है क्रमबद्ध, तर्कसंगत व स्पष्ट परिवर्तनों की उत्तरोत्तर श्र`खला।

अभिव`द्धि	–	मात्रात्मक परिवर्तन
विकास	–	मात्रात्मक और गुणात्मक परिवर्तन

सभी प्रकार का विकास कुछ विशिष्ट सिद्धान्तों के अनुसार घटित होता है जिनमें से कुछ निम्न हैं–

1. सभी प्रकार की अभिव`द्धि व विकास एक क्रमबद्ध श्रं`खला में होते हैं। एक बच्चा तभी बैठ पाता है जब उसकी पीठ की मांसपेशियां उसे सहारा देने के लिये तैयार होती हैं।

2. प्रत्येक बच्चा सामान्यतया कई अवस्थाओं से गुजरता है जिसमें से प्रत्येक की अपनी विशेषताएं होती हैं।

चित्र 18.1 (a)
श्रंखलाबद्ध व द्धि

3. विकास में वैयक्तिक भिन्नताएं भी होती हैं। प्रत्येक बच्चा अपनी एक निश्चित गति से बढ़ता है। आप जानते ही हैं कि बच्चा एक साल का होने तक चलना प्रांरभ कर देता है, परन्तु आपने यह भी देखा होगा कि कुछ बच्चे एक साल से पहले और कुछ एक साल के बाद भी चलते हैं।

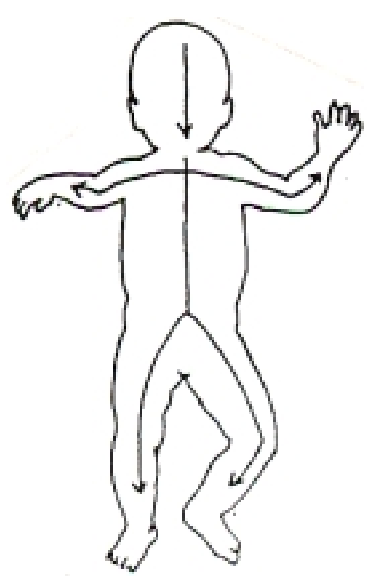

चित्र 18.1 (b) श्रंखलाबद्ध विकास

4. यद्यपि मानव एकीक`त रूप में विकसित होता है फिर भी उसके शरीर के विभिन्न अंग भिन्न गति से विकसित होते हैं। मूल रूप से विकास की गति की दो श्र`खलाएं हैं:

   (a) **सिफॅलोकॉडल** अर्थात विकास सिर से पाँव की ओर अग्रसर होता है। सिर और मस्तिष्क पहले विकसित होते हैं, फिर गरदन और धड़ आदि।

   (b) **प्रॉक्सिमोडिस्टल** अर्थात विकास केन्द्र से पोरों की ओर अग्रसर होता है। यानी बच्चा पहले अपनी रीढ़ की हड्डी पर नियन्त्रण प्राप्त करता है फिर बांहों पर और फिर अंगुलियों पर।

अनुवांशिक संरचना अपने माता–पिता से विरासत में पाई गई क्षमताएं हैं।

5. विकास परिपक्वता और सीखने की आपसी अतं:क्रिया का परिणाम है। परिपक्वता व्यक्ति की अनुवांशिक संरचना में उपस्थित क्षमताओं का उजागर होना है जबकि सीखने का अर्थ अनुभव व अभ्यास के उपरांत आने वाले परिवर्तन हैं।

18.4 अभिव`द्धि व विकास को प्रभावित करने वाले कारक

(i) **अनुवांशिकता:** यह वह प्रक्रिया है जिससे बच्चे के जन्म से पूर्व ही माता पिता के गुण व नैन नक्श आदि बच्चे में आ जाते हैं। अतः त्वचा व आंखों का रंग, कद, शरीर की बनावट, बुद्धि और प्रतिभाएं आदि सभी निश्चित होते हैं और एक सीमा से अधिक इनमें कोई भी परिवर्तन नहीं ला सकता।

(ii) **जन्म पूर्व (गर्भावस्था) का वातावरण:** यह माता के गर्भाशय में भ्रूण का वातावरण है। यदि माँ का पोषण उचित नहीं है या वह भावनात्मक रूप से परेशान है या धूम्रपान या मदिरापान करती है या फिर कोई दवा लेती है अथवा किसी विशिष्ट रोग से पीड़ित है, तो बच्चे की व`द्धि काफी हद तक प्रभावित होती है।

(iii) **पोषण:** बच्चे के स्वस्थ विकास के लिये समुचित पोषण अत्यंत आवश्यक है। एक कुपोषित बच्चे की अभिव`द्धि या तो अवरूद्ध हो जाती है या सामान्य रूप से नहीं हो पाती।

(iv) **बुद्धि:** कुशाग्र बुद्धि तीव्र विकास से संबंधित है जबकि मंद बुद्धि के कारण विकास के विभिन्न पहलुओं में कमी आ जाती है।

(v) **घर का भावनात्मक माहौल:** यदि घर में झगड़े या तनाव हों या बच्चे को वांछित प्रेम व स्नेह नहीं दिया जाता या बच्चे को शारीरिक या मानसिक प्रताड़ना दी जाती है तब बच्चे का विकास अवरूद्ध हो जाता है।

(vi) **बच्चे का स्वास्थ्य:** यदि बच्चा अकसर बीमार रहता है या उसमें किसी प्रकार की कमी या विकलांगता है या फिर उसकी अंतःस्रवी ग्रंथियों में किसी प्रकार की समस्या है तब उसके विकास के प्रभावित होने की संभावनाएं अधिक हैं।

(vii) **प्रेरणा व प्रोत्साहनों का स्तर:** एक बच्चे को उसके वातावरण से जितनी मात्र में प्रोत्साहन प्राप्त होते हैं अर्थात अपने वातावरण को जानने के अवसर, अन्य लोगों के साथ अंतःक्रिया के अवसर आदि सभी विकास की गति को प्रभावित करते हैं।

(viii) **सामाजिक व आर्थिक स्थिति:** यह निर्धारित करती है कि बच्चे को किस प्रकार का पोषण, प्रेरणा व प्रोत्साहन, सुविधाएं व अवसर प्राप्त होते हैं।

(ix) **लिंग:** सभी बच्चे विकास की एक श्र`खला का अनुसरण करते हैं। परंतु लड़कियों में लड़कों की अपेक्षा कुछ कौशल जल्दी आते हैं और कुछ कौशल लड़कों में लड़कियों की अपेक्षा अधिक जल्दी आते हैं। उदाहरण के लिये लड़कियों में भाषा का विकास तीव्र होता है जबकि कूदने फांदने, पकड़ने और फेंकने का कौशल लड़कों में अधिक तीव्र होता है। बच्चों का लिंग भी उनके शारीरिक विकास को तय करता है जैसे लड़के, लड़कियों की तुलना में अधिक लम्बे, भारी व बलिष्ठ होते हैं।

टिप्पणी

पाठगत प्रश्न 18.2

अपनी शब्दाबली परखें :

मानव विकास आपके लिये एक नयी परिकल्पना है और आपको इसे पढ़ते हुए कई नये शब्द मिले होंगे। इन शब्दों के सबसे नजदीकी अर्थ वाले शब्द का चुनाव करिये। आप सही उत्तर पाठ के अंत में देख सकते हैं।

(i) **शारीरिक बनावटः** (a) कलासंग्रह की बनावट (b) भवन की संरचना (c) डील–डौल।

(ii) **बौद्धिक क्षमताः** (a) दिलचस्प वक्ता (b) तर्कपूर्ण चिंतन (c) चतुर

(iii) **अनुवांशिक संरचनाः** (a) जींस पहनना (b) किसी विशेष बनावट या लक्षण के साथ जन्म लेना (c) उदारता पूर्वक देना।

(iv) **अंतःस्रावी प्रक्रिया :** (a) कोई महत्त्वपूर्ण कार्य आयोजित करने की प्रक्रिया (b) अपराध में कमी करना (c) हॉरमॉन स्रावित करने वाली ग्रंथियों की प्रक्रिया।

(v) **जन्म पूर्व का वातावरणः** (a) गर्भ में भ्रूण का वातावरण (b) घर का वातावरण (c) स्वस्थ वातावरण

(vi) **घर का भावनात्मक स्तरः** (a) घर में प्रसन्नता का माहौल (b) घर में डर का माहौल (c) घर में भावुकता का माहौल

18.4 शारीरिक विकास

शारीरिक विकास के अतंर्गत (1)कद व वजन में बढ़ोत्तरी, (2)शारीरिक अनुपात में परिवर्तन, (3)दांतों, हड्डियों और मांसपेशियों का विकास आता है।

(i) कद व वजन में बढ़ोतरी

जन्म के समय एक नवजात शिशु का वजन लगभग 2 से 3.5 किलोग्राम होता है। तीन-चार दिनों बाद ही उसका वजन 150 से 200 ग्राम तक कम हो जाता है। इसके पश्चात उसकी तीव्रता से व`द्धि होती है और छः महीने तक उसका वजन लगभग दुगुना हो जाता है। एक वर्ष की आयु तक उसका वजन तीन गुना अधिक हो जाता है।

जन्म के समय बच्चे की लम्बाई लगभग 40 से 50 सेंमी तक होती है और एक वर्ष तक यह जन्म की लम्बाई से डेढ़ गुना अधिक हो जाती है। उसके बाद यह नीचे तालिका में दर्शायी गयी लम्बाई के हिसाब से बढ़ती जाती है।

टिप्पणी

तालिका 18.2 : NCHS के अनुसार बच्चों व किशोरों का शारीरिक लम्बाई व वजन

आयु (वर्ष में)	लड़के		लड़कियां	
	लम्बाई (से.मी)	वजन (किग्रा)	लम्बाई (से.मी)	वजन (किग्रा)
0	50.5	3.3	49.9	3.2
¼ (3 माह)	61.1	6.0	60.2	5.4
½ (6 माह)	67.8	7.8	66.6	7.2
3/4 (9 माह)	72.3	9.2	71.1	8.6
1.0	76.1	10.2	75.0	9.5
1.5	82.4	11.5	80.9	10.8
2.0	85.6	12.3	84.5	11.8
3.0	94.9	14.6	93.9	14.1
4.0	102.9	16.7	101.6	16.0
5.0	109.9	18.7	108.4	17.7
6.0	116.1	20.7	114.6	19.5
7.0	121.7	22.9	120.6	21.8
8.0	127.0	25.3	126.4	24.8
9.0	132.2	28.1	132.2	28.5
10.0	137.5	31.4	138.3	32.5
11^+	140	32.2	142	33.7
12^+	147	37.0	148	38.7
13^+	153	40.9	155	44.0
14^+	160	47.0	159	48.0
15^+	166	52.6	161	51.4
16^+	171	58.0	162	53.0
17^+	175	62.7	163	54.0
18^+	177	65.0	164	54.4

(ii) शारीरिक अनुपात में परिवर्तन

नवजात शिशु का सिर उसके शरीर का 1/4 (चौथाई) हिस्सा ही होता है। जैसे–जैसे वह बड़ा होता है उसका शारीरिक अनुपात बदलता जाता है जैसा कि आप नीचे दिये गये चित्र में देख सकते हैं।

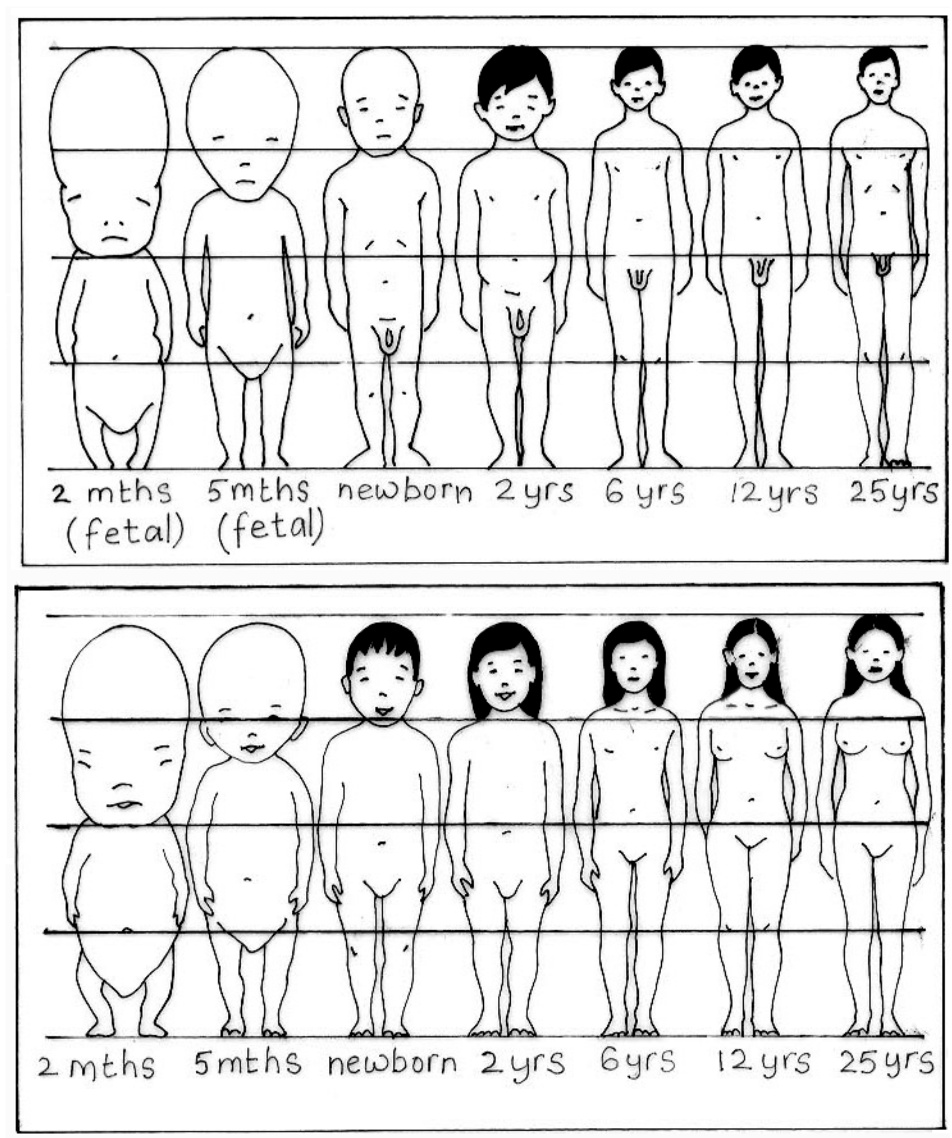

चित्र 8.1(c) : शारीरिक अनुपात में बदलाव

शारीरिक विकास में मील के पत्थर (Milestones)

बच्चे में विकास ऊपर से नीचे की ओर बढ़ता है। उसके बैठने से पहले उसकी गरदन और कंधे की मांसपेशियां मजबूत होनी चाहियें। खड़े होने से पहले उसका धड़ मजबूत

होना चाहिये। उसके विकास की गति उसके अनुवांशिक गुणों पर निर्भर करती है न कि उसके आसपास के वातावरण पर। पर यह भी सत्य है कि जो बच्चा दिलचस्प खिलौनों से घिरा फर्श पर बैठा है वह बग्गी में बैठे दूसरे बच्चे से जल्दी चलना सीखेगा।

चित्र : 18.2 शारीरिक विकास में मील के पत्थर

1. **छः सप्ताह में:** माँ को देखकर हँसता है। डोरी पर लटके छल्ले को देर तक देखता है और उसकी नजर माँ का पीछा करती है।
2. **तीन माह में:** आवाज की ओर सिर धुमाता है। माँ के कंधे पर अपना सिर टिकाता है।
3. **छः माहः** जब आप बच्चे को कंधे से लगाते हैं तो उसका सिर और पीठ सीधी होती है। तकिये के सहारे बैठता है, गोदी में आने के लिए हाथ बढ़ाता है।

जैसे–जैसे बच्चा तीव्रता से बढ़ता है, पीठ और धड़ की मांसपेशियों पर उसका नियन्त्रण सबसे पहले, फिर बांहो में और अंत में अंगुलियों पर आता है।

(iii) दाँत, हड्डियों और मांसपेशियों का विकास

1. **दांत :** एक सामान्य और स्वस्थ बच्चे के नीचे के सामने वाले दांत, जिन्हें इनसाइज़र कहा जाता है, 5 या 6 माह के बीच आते हैं। इसके बाद ऊपर के इनसाइज़र सातवें महीने में आते हैं। इसके बाद ऊपर के किनारे वाले दांत जिन्हें कैनाइन कहते हैं आठवें माह में आते हैं। फिर नीचे के कैनाइन 9वें व 10वें महीने में आते हैं। 3 वर्ष की आयु तक आते-आते बच्चे के 20 दांत आ जाते हैं। ये दांत दूध के दांत कहलाते हैं क्योंकि मध्य बाल्यावस्था में इनके स्थान पर पक्के दांत आ जाते हैं।

2. **हड्डियां और मांसपेशियां :** जन्म के समय बच्चे की हड्डियां मुलायम होती है जिनमें कार्टिलेज टिश्यू अधिक होते हैं। जैसे–जैसे वह बढ़ता है, उसकी हड्डियों मे कैलशियम जमा होने लगता है जिसे ऑसिफिकेशन कहते हैं। यह एक निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है। यही कारण है कि जब बच्चा गिरता है, उसकी हड्डियां कम ही टूटती हैं। बच्चों की हड्डियां चर्बी और मांसपेशियों से ढकी होती हैं। प्रारम्भिक वर्षों में चर्बी, मांसपेशियों से अधिक होती है। जैसे–जैसे बच्चे बढ़ते हैं, मांसपेशियाँ, चर्बी का स्थान ले लेती हैं।

18.5 गत्यात्मक विकास के सोपान/मील पत्थर

आयु	*गत्यात्मक विकास*
0–2 माह	अंगड़ाई लेता है, पैर मारता है, मुट्ठी बांधे रहता है।
2–4 माह	चलते हुये व्यक्ति का अपनी आँखों से पीछा करता है, किसी चमकीली वस्तु को घूरता है, अपनी छाती जरा उठाता है। पेट के बल लिटाने पर सर उठाता है और पीठ के बल लिटाने पर करवट ले लेता है। हाथ में खिलौना पकड़ना प्रारंभ कर देता है।
4–6 माह	गोदी में लेने पर वह अपनी गर्दन स्थिर रखता है। खिलौने उठाता है और वस्तुओं को पकड़ने की कोशिश करता है। गोदी में आने के लिये हाथ बढ़ाता है। सिर और कंधे उठाता है और पलट सकता है। पेट के बल लेटा होने पर वह कोहनी के बल उठता है। सहारे से बिठाने पर वह बैठ भी जाता है।
6–8 माह	सिर उठा सकता है और बिना सहारे के सीधा बैठ सकता है। चम्मच बजाता है और फर्श थपथपाता है। टेबल, फर्श से वस्तुएं उठा लेता है। दोनों हाथ

टिप्पणी

	में खिलौना पकड़ लेता है। अब तक वह वस्तुओं को पकड़ने के लिये अपने पूरे हाथ का प्रयोग करना सीख चुका होता है।
8–10 माह	घुटनों चलना प्रारंभ कर देता है। फर्नीचर का सहारा लेकर खड़ा होने का प्रयास करता है। छोटी वस्तुएं जैसे बटन और सिक्के अंगुठे और अंगुली से उठाता है। वस्तुओं को उठा कर काटता व चबाता है।
10–12 माह	हल्के सहारे से खड़ा हो जाता है। सहारे से चलता है, हल्की वस्तुओं को धक्का दे सकता है। छोटी व बड़ी वस्तुएं उठाकर उनका निरीक्षण करता है।
1 से 2 साल	बिना सहारे चलता है। कप से कुछ भी पी सकता है। चम्मच को पकड़ना व प्रयोग करना सीख जाता है। खींचकर चलाने वाले खिलौनों से खेलता है। सीढ़ी चढ़ व उतर सकता है। आड़ी तिरछी रेखाएं बनाता है। खाना स्वयं खाता है।
2 से 3 साल	खेलते हुए थकता नहीं है। स्वयं भली प्रकार खाना खा सकता है। मलमूत्र पर उसका नियन्त्रण हो जाता है। बालों में कंघी व दांतों को ब्रश कर सकता है। अलमारी से खिलौने निकाल व रख सकता है। साधारण निर्देशों को समझ सकता है।
3 से 5 साल	अपने कपड़ों के बटन लगा व खोल सकता है। बिना सहायता के कपड़े पहन सकता है। शौच जाने व हाथ धोने जैसी जरूरतों को पूरा कर सकता है। स्कूल जाने के लिए तैयार होता है।

18.6 सामाजिक भावनात्मक विकास

जन्म के समय बच्चा न तो सामाजिक होता है और न असामाजिक, लेकिन 3 महीने में वह मुस्कुराने लगता है और प्यार का प्रत्युत्तर भी देता है। 5 या 6 महीने में वह जाने पहचाने व्यक्ति व अजनबी में भेद कर पाता है। 1 वर्ष की आयु में छोटे–छोटे खेल खेल सकता है और डेढ़ वर्ष की आयु मे अजनबी के सामने शर्माने लगता है। दो वर्ष की आयु तक उसे अपने हम उम्र बच्चों का साथ अच्छा लगने लगता है। अब वह गुस्सा भी करने लगता है और परिवार में नये बच्चे के आगमन का प्रतिकार करता है। परिवारजनों से बिछुड़ने का डर बढ़ जाता है। अपने माता–पिता की नकल करना उसे अच्छा लगता है। 3 साल की आयु तक अपने माता–पिता के लिये प्रेम प्रदर्शन करता है और

सहयोगात्मक खेल खेलता है। उसके काल्पनिक मित्र होते हैं। वह लिंग आधारित क्रियाएं करने लगता है। वह स्कूल–पूर्व शाला जाने लगता है। 4 से 5 वर्ष की आयु के दौरान अन्य बच्चों के साथ खेलना पसंद करता है और प्रतिस्पर्धात्मक हो जाता है।

18.7 भाषा विकास

जन्म के समय बच्चा अपनी जरूरतों के लिये रोता है। धीरे धीरे उसका रोना कुछ अलग सा हो जाता है और माँ उसकी भूख, परेशानी और दर्द के रोने में भेद कर सकती है।

3 माह तक वह किलकारी भरने लगता है अर्थात जब भी वह प्रसन्न होता है या गोदी में उठाया जाता है तब वह किलकारी भरता है। 6 से 7 महीने में किलकारी बबलाने में बदल जाती है जैसे मा–मा, बा–बा आदि शब्दों को दोहराना। 9वें महीने तक बच्चा कुछ–कुछ शब्द बोल पाता है। एक ही शब्द पूरे वाक्य के लिये पर्याप्त होता है, जैसे 'गुड़िया'– जिसका अर्थ है 'मुझे गुड़िया चाहिये'। 1 साल का होते होते दो शब्दों को जोड़ सकता है। दो वर्ष में वह 2 या 3 शब्दों के वाक्य प्रयोग कर सकता है।

5 साल की आयु तक एक बच्चे की शब्दावली लगभग 5000 शब्दों की होती है। यह शब्दकोश फिर तीव्रता से बढ़ता है।

पाठगत प्रश्न 18.3

(1) कॉलम A में दिए गए गत्यात्मक और सामाजिक कौशलों का, जो एक बच्चा 3 वर्ष की आयु में सीखता है, कॉलम B से मिलान करिये। कॉलम B में कुछ उत्तर एक से अधिक बार प्रयोग किए जा सकते हैं।

कॉलम A	**कॉलम B**
(i) बिना सहारे के चलना	(a) 1 से 2 साल में
(ii) बिना सहारे के बैठना	(b) 3 साल में
(iii) सीढ़ी चढ़ना	(c) 2–3 साल में
(iv) मलमूत्र पर नियन्त्रण	(d) 5 से 6 माह
(v) अजनबियों को देखकर शर्माना	(e) 6 माह में
(vi) साधारण खेलों में सहयोग	(f) 1 साल में
(vii) सहयोगात्मक खेल	(g) 8–10 माह में
(viii) जान पहचान वाले और अजनबी में भेद कर पाना	(h) 2 साल में

(ix) 2 या 3 शब्दों के वाक्य बोलना	(i) 6 से 8 माह
(x) बबलाना	(j) डेढ़ साल
(xi) किसी चलते फिरते व्यक्ति का आंखों से पीछा करना	(k) 2–4 माह में

2. गत्यात्मक विकास की परिभाषा दीजिये।

....

....

3. दो प्रकार के गत्यात्मक विकासों के नाम लिखिये।

....

....

18.8 संज्ञानात्मक विकास के लक्षण

बच्चे के जन्म से लेकर 5 वर्ष की आयु तक संज्ञानात्मक विकास की विशेषताएं निम्नलिखित हैं।

- संसार का अस्तित्व मानता है, चाहे वह देख पाये या नहीं। (वस्तु स्थायित्व)
- दूसरों का द`ष्टिकोण नहीं समझ पाता है। (आत्मकेन्द्रित)
- तर्कपूर्ण ढंग से नहीं सोच पाता है।
- विश्वास करता है कि सभी चीजें (जीवित व म`त) जीवन्त होती हैं और उनमें भावनाएं भी होती हैं।
- काल्पनिक खेलों में लिप्त रहता है।
- ऊपरी दिखावट से धोखा खा जाता है।
- चंचल प्रव`त्ति का होता है।
- स्मरण शक्ति सीमित होती है।
- कारण संबंधों को समझ नहीं पाता है।
- रंग, आकार, संख्या, दिनों आदि की अवधारणा समझने लगता है।
- बहुत ज्यादा जिज्ञासा होती है।

18.9 बांये या दांये हाथ का प्रयोग

आप सभी जानते हैं कि हम अपने दैनिक कार्यों के लिये आमतौर पर अपना दायां हाथ प्रयोग करते हैं। लेकिन कुछ बच्चे अपना बायां हाथ अपने मुख्य हाथ की तरह प्रयोग करते हैं। ऐसे बच्चों पर दायां हाथ प्रयोग करने के लिये बल नहीं डाला जाना चाहिये क्योंकि ऐसा करने से उनके मस्तिष्क पर व अन्य विकास पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। ऐसे बच्चे में भाषा संबधी समस्यायें भी विकसित हो सकती हैं। ऐसा इसलिये होता है क्योंकि दायां हाथ प्रयोग करने वाले लोगों में हाथ का प्रयोग नियंत्रित करने वाला केन्द्र मस्तिष्क में बायीं ओर होता है और वाणी का केन्द्र दायीं ओर होता है। पर बायां हाथ प्रयोग करने वाले लोगों में विपरीत होता है– वाणी का केन्द्र बायीं ओर तथा हाथ के प्रयोग का नियंत्रण केन्द्र दायीं ओर होता है।

जब आप बच्चे को बायें हाथ से दायें हाथ का प्रयोग करने के लिये बाध्य करते हैं तब वाणी का केन्द्र हाथ प्रयोग के नियंत्रण केन्द्र का कार्यभार भी ले लेता है। अतः वाणी के केन्द्र पर अत्यधिक भार पड़ता है और इससे बोलचाल व हाथ प्रयोग दोनों ही कार्यों पर प्रभाव पड़ता है। इससे बोलचाल संबंधी समस्यायें पैदा हो जाती हैं। इसके साथ ही लिखावट खराब हो जाती है और सामंजस्य संबंधी समस्यायें भी पैदा हो जाती हैं। याद रखिए, बायां हाथ प्रयोग करने वाले बच्चे को बायें हाथ का ही प्रयोग करने दीजिये। बच्चे चाहे जो भी हाथ इस्तेमाल करें–दायां या बायां, उनके बौद्धिक विकास पर इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

पाठगत प्रश्न 18.4

1. निम्न सूची में से संज्ञानात्मक कौशलों पर चिह्न (√) लगाइये। अपने चयन के कारण दीजिए।

   (i) तर्कपूर्ण ढंग से सोचना

   (ii) काल्पनिक दुनिया में रहना

   (iii) हिलती वस्तुओं का आंखों से पीछा करना

   (iv) कारण–संबंध के विषय में भ्रांति

   (v) रंगों की पहचान

   (vi) चमच्च से खाना खाना

   (vii) जिज्ञासा

   (viii) ऊपरी बनावट से भ्रमित होना

   (ix) अपने दांतों में ब्रश व बालों में कंघी करना

   (x) सीमित स्मरण शक्ति

18.10 बच्चों की देखभाल

एक नवजात बच्चा असहाय, कोमल व नाजुक होता है और उसकी माता को उसकी अच्छी देखभाल करने की आवश्यकता है ताकि वह बड़ा होकर स्वस्थ व ह्ष्ट–पुष्ट बने। प्रत्येक बच्चे को समुचित आहार, आराम और नींद, नियमित स्नान, उचित कपड़े और रोगों से सुरक्षा के लिए प्रतिरक्षण की आवश्यकता है।

1. **आहारः** बच्चे के जन्म के उपरान्त माँ के दूध का पहला पीला स्राव कोलॉस्ट्रम कहलाता है। इसमें सुरक्षात्मक प्रतिपिंड होते हैं जिनमें कुछ रोगों के प्रति रोधक्षमता होती है।

   माँ का दूध सुपाच्य होता है। इसकी आदर्श संरचना व तापमान होता है। यह माता को भावनात्मक संतोष प्रदान करता है और साथ ही बच्चे को भी सुरक्षा-भावना देता है। अतः सभी नवजात बच्चों को आवश्यक रूप से स्तनपान कराना चाहिये।

   जब बच्चा 3 या 4 माह का हो जाता है तब उसके पोषण के लिये माँ के दूध ही पर्याप्त नहीं है। अतः उसे धीरे–धीरे माँ के दूध से तरल या अर्द्धठोस या ठोस आहार पर लाया जाना चाहिये। इस प्रक्रिया को दूध–छुड़ाना या स्तन्यमोचन कहते हैं। प्रारंभ में फलों का रस, सब्जियों व दालों का सूप दिया जाना चाहिये। इसके बाद मसली हुई दाल, फल और सब्जियां, सूप व खीर आदि दिये जा सकते हैं। जब बच्चा 1 साल का हो जाता है, वह कच्ची सब्जियां व रोटी, फल आदि चबा सकता है। स्तन्यमोचन धीरे–धीरे करना चाहिए।

2. **आराम व नींदः** बच्चे की उचित व`द्धि व विकास के लिये आराम की अत्यंत आवश्कता है। इससे बच्चा ह्ष्ट–पुष्ट और स्वस्थ बनता है। यद्यिप हर बच्चे के आराम का समय भिन्न होता है, औसतन उन्हें निम्नांकित के अनुसार नींद मिले तो अच्छा रहता है।

तालिका 18.3 बच्चों के लिए नींद की अवधि

आयु	नींद की अवधि
0–2 माह	20 से 22 घंटे प्रतिदिन
2–6 माह	16 से 18 घंटे प्रतिदिन
6–12 माह	12 घंटे प्रतिदिन (और 1–2 घंटे दोपहर व सुबह की नींद)
1–2 वर्ष	12 घंटे, रात की और दोपहर की नींद मिलाकर
2–5 वर्ष	8 से 10 घंटे, रात की और दोपहर की नींद मिलाकर

टिप्पणी

3. **स्नान:** सभी बच्चों को नियमित रूप से स्नान की आदत डालने के लिये नियमित स्नान करवाना आवश्यक है। हो सके तो प्रत्येक दिन नहलाने से पहले मालिश भी करनी चहिये। पानी का तापमान 85^0F रखें। गर्मियों में बच्चों को दिन में दो बार नहलाया जा सकता है। सर्दियों में बच्चे को दिन में एक बार था एक दिन छोड़कर भी नहलाया जा सकता है।

ाचित्र 18.3 नहलाना

4. **उचित वस्त्र:** बच्चे के वस्त्र आरामदेह, मुलायम व अवशोषक कपड़ों के जैसे सूती होने चाहिए। उनके डिजाइन सरल, रंग चमकीले व आसानी से धुलने वाले होने चाहिये। बच्चों के वस्त्रें में अधिक झालर, डोरियां, रिबन व बटन नहीं लगे होने चाहिये। बता सकते हैं, क्यों? ये उन्हें चुभेंगे व गर्दन में लिपट सकते हैं।

   चूँकि बच्चे तीव्रता से बढ़ते हैं अत: उनके कपड़े न तो बहुत सारे होने चाहिये और न अत्यंत मंहगे। बच्चे के लिये तिकोनी लंगोट सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण वस्त्र है। अत: ये हल्के, मुलायम, अवशोषक और शीध्र सूखने वाले कपड़े की बनी होनी चहिये।

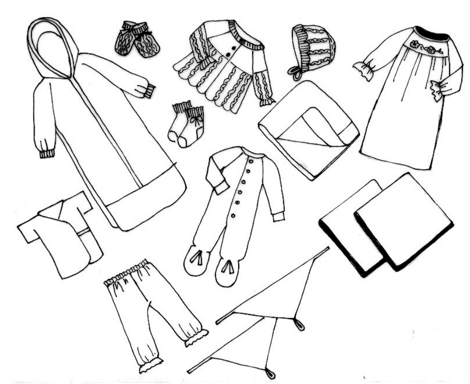

चित्र 18.4 बच्चों के वस्त्र

5. **रोग प्रतिरक्षण:** जन्म से ही सभी बच्चों को संक्रमित रोगों से नियमित रूप से प्रतिरक्षित करना चाहिये क्योंकि इससे उनके शरीर की प्रतिरोधात्मक शक्ति बढ़ती है।

तालिका 18.4 प्रतिरक्षण सारिणी

किसके लिये	क्या	कब	क्यों
गर्भवती स्त्री	टिटनस टॉक्साइड (टी.टी.)	गर्भावस्था के प्रारंभ में	टिटनस से रक्षा करता है
		पहले टीके के एक माह बाद	
शिशु (एक साल से कम)	बी.सी.जी.(बैसिलस कैलमेट ग्वैरिन) वैक्सीन	जन्म के समय	क्षय रोग (ट्युबर कुलोसिस) से बचाव

	पोलियो की पीने वाली दवा (0)		पोलियो से बचाव
	बी.सी.जी.	6 सप्ताह में	क्षय रोग से बचाव
	डी.पी.टी. – 1		डिफ्थीरिया, काली खांसी और टिट्नस से बचाव
	पोलियो की पीने वाली दवा (1)		पोलियो से बचाव करता है
	डी.पी.टी. –2	10 सप्ताह में	डिफ्थीरिया, काली खांसी और टिट्नेस से बचाव
	पोलियो की पीने वाली दवा (2)		पोलियो से बचाव करता है
	डी.पी.टी.–3	14 सप्ताह में	डिफ्थीरिया, काली खांसी और टिट्नस से बचाव
	पोलियो की पीने वाली दवा (3)		पोलियो से बचाव
	खसरा	9 महीने में	खसरे से बचाव
	छोटी माता		छोटी माता से बचाव
1 साल बच्चे से अधिक	एम.एम.आर	15 महीने में	खसरा, गलखुआ व रूबैला से बचाव
	डी.पी.टी. (बूस्टर)	16 से 24 महीने में	डिफ्थीरिया, काली खांसी और टिट्नस से बचाव
	पोलियो की पीने वाली दवा (बूस्टर)		पोलियो से बचाव
	डी.टी	पांचवें या छठे वर्ष में	डिफ्थीरिया और टिट्नस से बचाव
	टिटनस टॉक्साइड	दसवें वर्ष में	टिट्नस से बचाव
	टिटनस टॉक्सॉइड	सोलहवें वर्ष में	टिट्नस से बचाव

18.11 बच्चों में व्यवहारगत समस्यायें

छोटे बच्चे अक्सर अनुचित व्यवहार का प्रदर्शन करते हैं। उदाहरण के लिये किसी बच्चे की हर किसी को मारने की, तोड़फोड़ करने की, गाली गलौज करने की, झूठ बोलने आदि की आदत हो सकती है। ये ऐसे व्यवहार हैं जो न केवल बच्चों को शारीरिक क्षति पहुंचाते हैं बल्कि दूसरे बच्चों में उनकी लोकप्रियता भी कम करते हैं।

कारण: इन व्यवहारों के विकसित होने के पीछे कई कारण हो सकते हैं। उनमें से कुछ इस प्रकार हैं:–

- जब बच्चे ऐसे वातावरण में रहते है जहाँ उन्हें स्वयं को अभिव्यक्त करने की आजादी नहीं होती तब वे ऐसा व्यवहार करने लगते है जो बिल्कुल भी स्वीक`त नहीं है।
- जब माता–पिता और शिक्षक बच्चों से अत्यधिक अपेक्षा रखते हैं और जब बच्चे उन अपेक्षाओं पर खरे नहीं उतरते, तब वे अनुचित व्यवहार दिखाने लगते हैं।

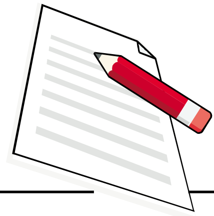

- बहुधा बच्चों को पता चल जाता है कि मनचाही चीज प्राप्त करने के लिये अनुचित व्यवहार ही एकमात्र साधन है। उदाहरण के लिये बच्चे को पता चल जाता है कि जब वह अपने छोटे भाई बहनों की पिटाई करता है तो माता–पिता उसकी तरफ ध्यान देते हैं या वह रोते हुये जमीन पर लोटने लगता है तब उसे वह खिलौना मिल जाता है जो उसे चाहिये।

चित्र 18.5

- जब परिवारिक माहौल बिगड़ जाता है तब भी बच्चे अनुचित व्यवहार करने लगते हैं। उदाहरण के लिये जब माता–पिता आपस में झगड़ते हैं या मार पिटाई करते हैं या जब उनकी माँ–दादी की आपस में बनती नहीं है।
- जब बच्चे के जीवन में कोई संकट आता है तब भी बच्चे अनुचित व्यवहार दिखाते हैं जैसे छोटे भाई या बहन के जन्म पर या परिवार में किसी प्रियजन की म`त्यु पर।
- जब बच्चे शारीरिक तौर पर सक्षम नहीं होते तब भी वे अनुचित व्यवहार दिखाने लगते हैं। ऐसा तब होता है जब वे लम्बी बीमार से उठे हों या फिर जल्दी–जल्दी बीमार पड़ते हैं।

खेल केन्द्र के व्यवस्थापकों को सावधान व समझदार होना चाहिये। जब भी कोई बच्चा अनुचित व्यवहार का प्रदर्शन करता है तब उन्हें शीध्रता से कार्यवाही करनी चाहिये। चूँकि बहुधा उनके व्यवहार का कारण उनका घर ही होता है अतः उन्हें बच्चे के माता–पिता का सहयोग लेना चाहिये। बच्चे की समस्या को समझकर समस्या का समाधान ढूँढना चाहिए। बच्चे को सजा देने से, डाँटने से या उसका मजाक उड़ाने से कुछ फायदा नहीं होगा। कुछ आम व्यवहार समस्याओं की व्याख्या निम्न तालिका में है।

तालिका 18.5 बच्चों में कुछ सामान्य व्यवहार समस्याएं

व्यवहार	अर्थ	क्या न करें	क्या करें
(a) दूसरे बच्चों को मारना	– क्रोधित होना – परेशान होने की भावना	– सजा दें या मारें पीटे – ऐसा व्यवहार करें कि बच्चे को शर्म आए	– उसका ध्यान बंटा दें – दूसरे बच्चों को चुपचाप अलग कर दें – बच्चे को प्रेम का अहसास करायें – भावनाओं को व्यक्त करने का अवसर दें।

टिप्पणी

(b) चीजों की तोड़–फोड़ करना	– विवशता की स्थिति – ईर्ष्या – ऊब – ध्यान आकर्षित करना	– डांटें, चिल्लाएं, पीटें – सजा दें	– बहुमूल्य वस्तुओं को उसकी पहुँच से दूर रखें – उसको खेलने के के लिये स्थान दें – उसे कुछ सस्ते खिलौने दें – बच्चे का ध्यान बंटाएं व उसे अन्य क्रियाओं में लगायें।
(c) अंगूठा चूसना	– चूसने की आवश्यकता – प्रेम व आश्वासन पाने की आवश्यकता – थकान – भूख – असंतुष्टि – ऊब	– सजा दें और डांटें – उसकी उंगलियों पर कुछ कड़वी चीज लगाएं या उसकी उंगलियां बांधे	– उसे चूसने की संतुष्टि दें – प्रेम, स्नेह व आश्वासन दें – उसे आनंददायी क्रियाकलाप में लगाएं – उसे बच्चों की आवश्यकता वाली वस्तुएं दें
(d) बिस्तर गीला करना	– बच्चा ट्रेनिंग के लिये तैयार नहीं है – भयभीत है – असुरक्षित है	– धमकाना और सजा देना – शौच की इच्छा जाहिर करने पर बल देना – बच्चे से यह कहें कि आप उसे प्यार नहीं करते	– बच्चे को स्वीकार करें – मान कर चलें कि बच्चा अनायास ही बिस्तर गीला कर सकता है। – बच्चे को आत्मविश्वासी बनाएं
(e) झूठ बोलना	– सजा का भय – अतिशयोक्ति – काल्पनिकता – ध्यानाकर्षण	– उपदेश या सजा या अस्वीकार – माफी मांगने को कहना – स्वयं परेशान होना	– कारण समझें – आवश्यकतानुरूप उस पर ध्यान दें – उसकी काल्पनिकता बढ़ाने के अवसर प्रदान करें

(f) खाने से इनकार करना	– भूखा नहीं है – तबियता खराब है – किसी विशेष भोजन को नापसंद करता है – जबरन उसे खाना खिलाया जाता है	– जबरदस्ती करें या सजा दें – बखेड़ा खड़ा करें – प्रलोभन या धमकी दें	– शांत रहें – नये प्रकार का भोजन उसके पसंद के भोजन के साथ दें
(g) भयभीत रहना	– दर्दनाक अनुभवों को मन में दोहराता है – माता–पिता का सानिध्य चाहता है – ग्लानि अनुभव करता है या स्वयं को प्रेम से वंचित समझता है	– जबरदस्ती करें – धमकाएं	– आश्वासन दें व उसे चिन्ता मुक्त करें – वातावरण को खुशहाल रखें – प्रोत्साहन दें – डराने वाले अनुभवों से दूर रखें
(h) चोरी करना	– अपना–पराया के विषय में अनजान है – अत`प्त इच्छाएं – चिड़चिड़ापन – आक्रामक भावनाएं	– डांटें – उसे बुरा लगने दें – सजा दें और बच्चे को अस्वीकृत करें – प्यार कम करें – दूसरों के सामने उसे अपमानित करें	– बच्चे को उसकी अपनी चीजें दें और उन पर स्वामित्व की भावना आने दें – उदार और समझदार बनें, बच्चे को छूट दें – रचनात्मक अभिव्यक्ति के साधन उपलब्ध करायें – सच्चे मित्र बनाने में उसकी सहायता करें

टिप्पणी

पाठगत प्रश्न 18.5

1. सही उत्तर चुनें व अपने उत्तर के तर्क बताएं।

(i) यदि बच्चे का वातावरण .... हो तो उसका व्यवहार अनुचित हो जाता है।

(a) कठोर (b) स्वतंत्र (c) कठोर व स्वतन्त्र (e) इनमें से कोई नहीं

तर्क ....

....

(ii) बच्चा अगँठा चूसता है क्योंकि वह–

(a) ऊबा हुआ है (b) असुरक्षित है (c) भयभीत है

(d) ध्यान आकर्षित करना चाहता है

तर्क ....

....

(iii) बच्चा बिस्तर गीला करता है क्योंकि वह–

(a) ऊबा हुआ है (b) असुरक्षित है (c) भयभीत है

(d) ध्यान आकर्षित करना चाहता है

तर्क ....

....

(iv) बच्चा झूठ बोलता है क्योंकि वह–

(a) ऊबा हुआ है (b) असुरक्षित है (c) ईर्ष्यालु है

(d) ध्यान आकर्षित करना चाहता है

तर्क ....

....

आपने क्या सीखा?

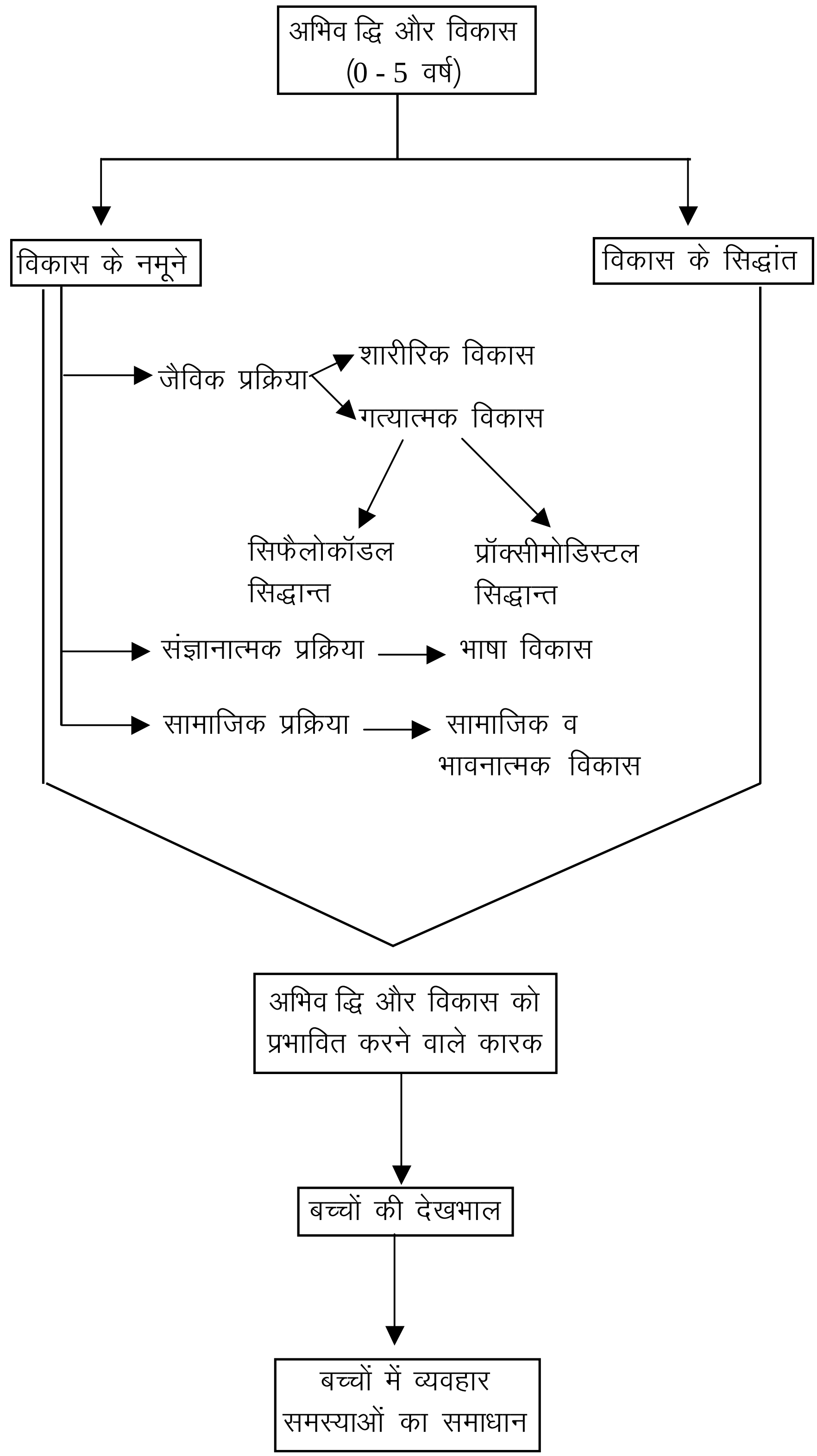
अभिव द्धि और विकास
(0 - 5 वर्ष)
विकास के नमूने
विकास के सिद्धांत
जैविक प्रक्रिया
शारीरिक विकास
गत्यात्मक विकास
सिफैलोकॉडल
सिद्धान्त
प्रॉक्सीमोडिस्टल
सिद्धान्त
संज्ञानात्मक प्रक्रिया
भाषा विकास
सामाजिक प्रक्रिया
सामाजिक व
भावनात्मक विकास
अभिव द्धि और विकास को
प्रभावित करने वाले कारक
बच्चों की देखभाल
बच्चों में व्यवहार
समस्याओं का समाधान

18.4 पाठान्त प्रश्न

1. गत्यात्मक विकास के मील के पत्थरों की सूची बनाइये।
2. 4 वर्ष के बालक की संज्ञानात्मक विशेषताएं बताइये।
3. कुछ लोग बायें हाथ का अधिक प्रयोग क्यों करते हैं? यदि उन्हें दायां हाथ अधिक प्रयोग करने पर जोर दिया जाये तब क्या होता है?
4. बच्चों के वस्त्रों के चुनाव के समय कौन से बिंदुओं पर ध्यान दिया जाना चाहिये?
5. प्रतिरक्षण सारणी लिखिये।
6. बच्चों में व्यवहारगत समस्यायों के विषय में लिखिये। इसके कारण लिखिये और उनमें से किन्हीं पांच के समाधान की विधियां लिखिये।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

18.1 1. (i) (e) (ii) (g) (iii) (c) (iv) (b) (v) (f) (vi) (d) (vii) (a)

2. विकास की अवस्थाएं–(i) नवजात, (ii) किशोरावस्था, (iii) पूर्व प्रौढ़ावस्था (iv) पूर्व बाल्यावस्था
विकास के नमूने (i) सज्ञांनात्मक प्रक्रिया (ii) सामाजिक प्रक्रिया (iii) जैविक प्रक्रिया

18.2 (i) c (ii) b (iii) b (iv) b (v) a (vi) c

18.3 (i) a (ii) d (iii) a (iv) a (v) b (vi) a (vii) f (viii) b (ix) d (x) h (xi) g (xii) i

18.4 (i), (ii), (iv), (v), (vii), (viii), (x)

18.5 (i) (a) जिस वातावरण में अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता न हो वहाँ बच्चे अनुचित व्यवहार विकसित कर लेते हैं।

(ii) (a) जो बच्चा ऊबा रहता है वह अक्सर अंगूठा चूसता है।

(iii) (b) असुरक्षित व भयभीत बच्चे बिस्तर गीला करते हैं।

(iv) (d) ध्यान आकर्षित करना चाहता है।

अधिक जानकारी के लिए लॉग ऑन करें
http://wwww.pey.pdse.edu/psicafe/areas/development/physdev-child/